DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
रीतिकाल
LIVE
17-06-2024 09:00 AM

# रीतिकाल का नामकरण

विभिन्न विद्वानों ने रीतिकाल को अनेक नामों से पुकारा है मिश्रबंधु ने इसे 'अलंकृत काल' कहा है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'श्रृंगार काल' कहा है। डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल इसे 'कला काल' कहते हैं। आचार्य शुक्ल ने रीति ग्रंथों की बहुलता के आधार पर इसका नाम 'रीतिकाल' रखा। जार्ज ग्रियर्सन ने 'रीतिकाव्य' नाम दिया है । त्रिलोचन ने 'अंधाकार काल' नाम दिया है।

## रीतिकाल के प्रवर्तक

- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने हिन्दी रीतिकाल का प्रवर्तक आचार्य केशवदास को माना है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'चिंतामणि' को रीतिकाव्य परम्परा का प्रवर्तक माना है। चिंतामणि के उपरान्त रीतिकाव्य परम्परा अविच्छिन रूप से चली।
- डॉ. भागीरथ मिश्र ने रीतिकाल का प्रवर्तक आचार्य केशवदास को ही माना है।
- डॉ. नगेन्द्र ने रचनाकार के व्यक्तित्व की दृष्टि से केशवदास को रीतिकाल का प्रवर्तक माना है।
- कालक्रम की दृष्टि से रीतिकाल के प्रणेता 'कृपाराम' (1541) हैं।

# रीतिकाल का विभाजन

रीतिकाल का विभाजन रीति को आधार बनाकर किया गया है।

1. रीतिबद्ध
2. रीतिसिद्ध
3. रीतिमुक्त

# रीतिबद्ध

संस्कृत अलंकारशास्त्र अथवा काव्यशास्त्र की निश्चित परम्पराओं में आबद्ध होकर हिन्दी में काव्य-रचना करने वाले कवियों को 'रीतिबद्ध' कवि कहा गया है।

## लक्षण ग्रंथ लिखने वाले इन कवियों में प्रमुख हैं-

- केशव, (1555-1617)
- मतिराम (1617)
- रसलीन (1699-1750)
- बिलग्रामी
- तोष
- भूषण (1613-1715)
- याकूब खाँ
- सुरति मिश्र

- भिखारीदास (1721)
- ग्वाल (1791-1968)
- पुनाथ रशिगोविन्द
- चिंतामणि (1609-1685)
- देव (1673-1767)
- मुबारक
- जान (नियामत खाँ)
- जशवंत सिंह (1626-1688)
- कुलपति मिश्र
- पद्माकर (1753-1833)
- सोमनाथ
- दूलह
- प्रतापसाहि
- मण्डन

# रीति सिद्ध

रीतिसिद्ध में वे कवि आते हैं, जिन्होंने रीति ग्रंथ नही लिखे किन्तु रीति' की उन्हे भली-भाँति जानकारी थी। वे रीति में पारंगत थे। इन्होंने इस जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग अपने काव्य ग्रंथों में किया। इस श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारी हैं।

रीति सिद्ध प्रमुख कवि निम्न हैं-

- सेनापति (1589)
- बेनी (1823)
- रसनिधि (1603)
- द्विजदेव (1820-1869)
- नृपशम्भु (1657)
- हठी जी (1780)
- बिहारी ( 1595-1663)
- कृष्णकवि (1720)
- पजनेस (1815)
- वृन्द (1643-1723)
- नेवाज (1680)

# रीतिमुक्त

जिन कवियों ने तत्कालीन रीति- रूढ़ि के विरूद्ध आक्रोश व्यक्त करते हुए रीतिबंधन को अस्वीकार कर, स्वच्छंद गति से अपने काव्य में प्रेम की पीर को अभिव्यक्त किया है, उन्हे 'रीतिमुक्त' कहा गया है। इस श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ कवि घनानन्द हैं।

## प्रमुख रीतिमुक्त कवि निम्न हैं-

- घनानन्द (1689-1739)
- शेख आलम
- ठाकुर बुन्देलखण्डी (1766-1833 ).
- बुद्धिसेन या बोधा

## विभिन्न आलोचकों द्वारा रीतिकाल के कवियों का वर्गीकरण

### रामचन्द्र शुक्ल का विभाजन

रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल को दो भागों में विभाजित किया है-

(i) रीतिग्रंथकार

(ii) अन्य

रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिग्रंथकार कवि के अन्तर्गत 57 कवियों का उल्लेख किया है।

## विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का विभाजन

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा रीतिकालीन कवियों का वर्गीकरण निम्नलिखित है-

रीतिबद्ध - केशवदास, सेनापति, जसवंतसिंह, मतिराम, देव, भिखारीदास, पद्माकर ।

रीतिसिद्ध - बिहारीलाल ।

रीतिमुक्त – शेख, आलम, घनानन्द, बोधा, द्विजदेव, रसखान, ठाकुर ।

## बच्चन सिंह का विभाजन

बच्चन सिंह द्वारा रीतिकालीन कवियों का वर्गीकरण निम्नलिखित है-

### (i) रीतिबद्ध कवि

रीतिचेतस — चिन्तामणि, जसवंत सिंह, भिखारीदास, प्रतापसाहि, ग्वाल।

काव्य चेतस - भूषण, मतिराम, देव, पद्माकर ।

### (ii) रीतिमुक्त

क्लासिकल काव्यधारा - बिहारीलाल |

स्वच्छन्द काव्यधारा - आलम, घनानन्द, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव |

# रीतिकालीन प्रमुख कवि

'रीतिकाल के अन्तर्गत प्रमुख कवियों का अध्ययन किया जाता है-

## केशवदास

केशव या केशवदास हिन्दी साहित्य के रीतिकाल की कवि - त्रयी के एक प्रमुख स्तम्भ है। मधुकरशाह के पुत्र महाराज इन्द्रजीत सिंह इनके मुख्य आश्रयदाता थे। केशव अलंकार सम्प्रदायवादी आचार्य कवि थे। अलंकारों के प्रति विशेष रूचि होने के कारण काव्य पक्ष दब गया है और सामान्यतः ये सहृदय कवि नही माने जाते हैं। अपनी क्लिष्टता के कारण ये 'कठिन काव्य के प्रेत' कहे गए हैं।

विशिष्ट प्रबन्ध काव्य रामचन्द्रिका प्रबन्ध निर्वाह, मार्मिक स्थलों की पहचान, प्रकृति वर्णन आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ नही है । परम्परा पालन तथा अधिकाधिक अलंकारों को समाविष्ट करने के कारण वर्णनों की भरमार है। चहल-पहल, नगरशोभा, साजसज्जा आदि के वर्णन में इनका मन अधिक रमा है।

संवादों की योजना में, नाटकीय तत्वों के सन्निवेश के कारण, इन्हें विशेष सफलता मिली है। प्रबन्धों की अपेक्षा मुक्तकों में इनकी सरलता अधिक स्थलों पर व्यक्त हुई है।

केशव ने अपने काव्य का माध्यम ब्रजभाषा को बनाया, परन्तु ब्रजभाषा का जो रूप सूर आदि अष्टछाप के कवियों में मिलता है वह केशव की कविता में नहीं। केशव संस्कृत के विद्वान थे अतः उनकी भाषा संस्कृत से अत्यधिक प्रभावित है। केशव की भाषा में बुंदेलखण्डी भाषा का भी काफी मिश्रण मिलता है। खारक, थोरिला (खूँटी), दुगई (दालान), गौरमदाइन (इन्द्रधनुष ) आदि जैसे बुंदेली शब्दों

का प्रयोग बराबर उनके काव्य में हुआ। जिसमें अवधी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। जैसे- इहां, उहां, दिखाउ, रिझाउ आदि।

केशव की काव्य शैली प्रौढ़ और गम्भीर है। पांडित्य प्रदर्शन के कारण वह कुछ दुरूह हो गई है।

केशवदास ने अपने काव्य में अनेक स्थलों पर विविध रसों की उत्कृष्ट व्यंजना की है, किन्तु मुख्यतः वे शृंगार और वीर रस के कवि हैं।

छन्दों के विषय में केशव को बहुत ज्ञान था। जितने प्रकार के छन्दों का प्रयोग उन्होंने किया, हिन्दी साहित्य में किसी ने नहीं किया।

"रामचन्द्र की चंद्रिका बरनति हों बहु छंद।"

केशवदास की रामचन्द्रिका को 'छंदों का अजायबघर कहा जाता है। केशव को अलंकारों से विशेष मोह था। उनके अनुसार, “जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत भूषन विन न विराजहीं कविता बनिता मित्त ।।"

अतः उनकी कविता में विभिन्न अलंकारों का प्रयोग सर्वत्र दिखाई देता है। अलंकारों के बोझ से कविता के भाव दब से गए हैं और पाठक को केवल चमत्कार हाथ लगता है।

## कृतियाँ / रचनाएँ

केशवदास रचित प्रामाणिक ग्रंथ नौ हैं-

रसिकप्रिया (1591), कविप्रिया (1601), नखशिख, छंदमाला, रामचन्द्रिका (1601), वीरसिंह देव चरित (1607), रतनबावनी (1607), विज्ञानगीता (1610), जहाँगीर जसचन्द्रिका (1612)

- 'कविप्रिया' में काव्यदोष, कवियों के गुण दोष, अलंकार, बारहमासा आदि का वर्णन है।
- 'रसिकप्रिया' में रस एवं नायक-नायिका भेद का वर्णन है।
- 'वीरदेव सिंह चरित' में ओरछा नरेश राजबीर सिंह देव बुंदेल का चरित्र-चित्रण है।
- 'रतनबावनी' में मधुकर शाह के पुत्र रत्नसेन के वीरोत्साह का वर्णन है।

- केशवदास ने भक्ति और ज्ञान - काव्य की परम्परा में 'विज्ञान गीता' वीरगाथा वर्णन की परम्परा में वीरसिंह देव चरित' और 'जहाँगीर जस चन्द्रिका' तथा प्रबन्ध काव्य परम्परा में 'रामचन्द्रिका' की रचना की।

# चिंतामणि

चिंतामणि का सम्बन्ध शाहजहाँ, चित्रकूटाधिपति रूद्रशाह सोलंकी, जैनुद्दीन अहमद और नागपुर के भोसला राजा मकरंदशाह के राजदरबारों से था, जहाँ इन्हें पर्याप्त सम्मान और प्रतिष्ठा मिली। चिंतामणि की अब तक दस कृतियों का पता लगा है-

(i) काव्यविवेक

(ii) कविकुल कल्पतरू

(iii) काव्यप्रकाश

(iv) छन्दोलता

(vi) रसमंजरी

(v) कवित्त रामायण

(vii) पिंगल

(viii) कृष्णचरित

(ix) कवित्त विचार

(x) श्रृंगार मंजरी

- चिंतामणि कृत 'कविकुल कल्पतरू' में आठ प्रकरण हैं, जिनमें काव्यभेद, काव्य-लक्षण काव्य-स्वरूप, गुण, अलंकार, दोष, ध्वनि आदि पर विचार किया गया है।
- 'कविकुल कल्पतरू' में लक्षण प्रायः दोहा- सोरठा छन्द में है और उदाहरण कवित्त सवैया में। लक्षण निरूपण में चिंतामणि ने प्राय: मम्मट का अनुसरण किया है।
- चिंतामणि कृत 'रसविलास' में रस विवेचन हैं, इस पर भानुदत्त की 'रसमंजरी' एवं विश्वनाथ के 'साहित्य दर्पण' का प्रभाव देखा जा सकता है।
- चिंतामणि कृत 'छन्द विचार' में प्राकृत पैंगलम् के आधार पर छन्दशास्त्र के सामान्य नियमों का उल्लेख मिलता है।

• चिंतामणि कृत 'श्रृंगार मंजरी' नायिका भेद का सुन्दर और विशद् ग्रंथ है। इसमें सूक्ष्मविवेचन की प्रधानता है । यह भानुदत्त की 'रस मंजरी' पर आधारित है। हिन्दी रीतिकाव्य के आचार्य कवि चिंतामणि का महत्त्व इस दृष्टि से सर्वाधिक है कि इन्होंने अपने से पूर्ववर्ती केशवदास की उस आलंकारिक परम्परा और पद्धति को छोड़कर, जो भामह और दण्डी आदि को लेकर चली थी, मम्मट और विश्वनाथ की रसवादी दृष्टि का अनुसरण किया,

कल अवकाश।

↓

हिन्दी क्लास